थारी सब चिन्ता मिट जावे ....

थारी सब चिन्ता मिट जावे, सेवा गोवर्धन की कर ले।

सेवा गोवर्धन की कर ले – 2

थारी सब .....

तू सात परिक्रमा कर ले, तू मानसी गंगा नहा ले।

थारा पाप सभी बह जाय, सेवा गोवर्धन की ....

मष्तक पर मुकुट बिराजे, कानन में कुण्डल साजे।

थारी हिचकी में हीरा लाल, सेवा .....

गिरिराज लागे प्यारो, ओ डोरा कन्ठी वालों।

थारे गल हीरा रो हार, सेवा .....

इन्दर कोप कियो ब्रज भारी, ओ नख पर गिरिवर धारी

ओ सब ब्रज को लियो रे बचाय, सेवा.....

थे करो प्रेम से सेवा और पावो मिसरी मेवा।

थारो जनम सफल होय जाय, सेवा.....

गिरिराज की महिमा गावे, वे भव–सागर तिर जावे।

वाँरो गौलोक में वास, सेवा.....

दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय।।